बुद्ध पुजा : पाली - हिंदी अर्थ सहित



संकलक - प्रोफसर डॉ ऋषि आचार्य

|| नमस्कार ||

अरहं सम्मासम्बुद्धो भगवा, बुद्ध भगवंन्त अभिवादेमि

अर्हंत सम्यक संबुद्ध भगवान बुद्ध को मैं अभिवादन करता हूँ ॥

स्वाक्खातो भगवता धम्मो, धम्म नमस्सामि

उन बुद्ध भगवान द्वारा उपदेश किए हुये धर्म को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, संघं नमामि

सन्मार्ग पे आरुढ ऐसे भगवान बुद्ध श्रावक संघ को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

उन भगवान अर्हंत सम्यक संबुद्ध को मेरा
नमस्कार हैं ॥
उन भगवान अर्हंत सम्यक संबुद्ध को मेरा
नमस्कार हैं ॥
उन भगवान अर्हंत सम्यक संबुद्ध को मेरा
नमस्कार हैं ॥

सरणत्तयं || त्रिशरण ||

बुद्ध सरणं गच्छामि ।

धम्मं सरणं गच्छामि ।

संघं सरणं गच्छामि ।

मैं बुद्ध को शरण जाता हूँ ।
मै धर्म को शरण जाता हूँ ।
मैं संघ को शरण जाता हूँ ।

दुतियम्पि बुद्ध सरणं गच्छामि ।

दुतियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि ।

दुतियम्पि संघं सरणं गच्छामि ।

दुसरी बार मैं बुद्‌ध को शरण जाता हूँ ।
दुसरी बार मै धर्म को शरण जाता हूँ ।
दुसरी बार मैं संघ को शरण जाता हूँ ।

ततियम्पि बुद्‌ध सरणं गच्छामि ।

ततियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि ।

ततियम्पि संघं सरणं गच्छामि ।

तिसरी बार मैं बुद्‌ध को शरण जाता हूँ ।
तिसरी बार मै धर्म को शरण जाता हूँ ।
तिसरी बार मैं संघ को शरण जाता हूँ ।

पंचसीलानि || पंचशील ||

पाणातिपाता वेरमणि, सिक्खापदं समादियामि ।

अदिन्नादाना वेरमणि, सिक्खापदं समादियामि ।

कामेसु मिच्छाचारा वेरमणि, सिक्खापदं
समादियामि ।

मुसावादा वेरमणि, सिक्खापदं समादियामि ।

सुरा-मेरय-मज्ज पमादठ्ठाना वेरमणि, सिक्खापदं
समादियामि ।

पंचशील

मैं प्राणीहिंसा से दुर रहने कि शिक्षा ग्रहण करता हुँ ॥
मैं चोरी करने से दुर रहने कि शिक्षा ग्रहण करता हूॅ ॥

मैं काम वासना के दुराचार से दुर रहने कि शिक्षा ग्रहण करता हूँ ॥
मैं झुट बोलने से दुर रहने कि शिक्षा ग्रहण करता हूँ ॥
मैं मद्य तथा मादक पदार्थ के सेवन करने से दुर रहने कि शिक्षा ग्रहण करता हूँ ॥

बुद्ध पुजा

वण्ण-गन्ध-गुणोपेतं एतं कुसुमसन्तति ।
पुजयामि मुनिन्दस्य, सिरीपाद सरोरुहे ।।१।।

वर्ण और गंध जैसे गुणों से युक्त पुष्पमाला से मैं मुनींद्र के श्रीपाद कमलों कि पुजा करता हूँ ॥

पुजेमि बुद्धं कुसुमेन नेनं, पुज्जेन मेत्तेन लभामि मोक्खं ।पुप्फं मिलायति यथा इदं मे, कायो तथा याति विनासभावं।।२।।

इन कुसुमों से (फुलों से) मैं बुद्ध कि पुजा करता हुं ।
इस पुण्य से मुझे निर्वाण कि प्राप्ती होगी, जैसे यह
फुल सुक जाता हैं वैसे हीं मेरा शरीर नश्वर हैं ॥

घनसारप्पदित्तेन, दिपेन तमधंसिना ।
तिलोकदीपं सम्बुद्धं पुजयामि तमोनुदं ।।३।।

अंधकार का नाश करने वाले, सर्वव्यापक प्रकाश
मान ऐसे (सुरज जैसे) इस विश्व का अज्ञानरुपी
अंधकार का नाश करने वाले त्रिलोकदीप सम्यक
संबुद्ध कि मैं पुजा करता हूँ ॥

सुगन्धिकाय वंदनं, अनन्त गुण गन्धिना।
सुगंधिना, हं गन्धेन, पुजयामि तथागतं ।।४।।

सुगंध युक्त शरीर वाले तथा अनंत गुण धारी सुगंध
से परीपुर्ण ऐसे तथागत कि मैं सुगंध से पुजा करता
हूँ ॥

बुद्धं धम्मं च सघं, सुगततनुभवा धातवो धतुगब्भे।लंकायं जम्बुदीपे तिदसपुरवरे, नागलोके च थुपे।।५।।

सब्बे बुद्धस्स बिम्बे, सकलदसदिसे केसलोमादिधातुं वन्दे। सब्बेपि बुद्धं दसबलतनुजं बोधिचेत्तियं नमामि।।६।।

बुद्ध, धर्म, संघ, लंका, जंबुदीप तथा नागलोक और त्रिदशपुर के स्तुपों मे स्थापित बुद्ध शरीर के अवशेष, केश, लोम और धातुओं के जितने रुप हैं वे सभीं बुद्ध के ही रुप हैं, उन सभीं को, सर्व बुद्ध, दशबलतनुज और बोधीचैत्य उन सभीं को मैं नमन करता हूँ ॥

वन्दामि चेतियं सब्बं सब्बट्ठानेसु पतिठ्ठितं। सारीरिक-धातु महाबोधि, बुद्धरुपं सकलं सदा ।।७।।

सभी जगहों पर स्थापित बुद्ध शरीर के अवशेषों को महाबोधीवृक्ष तथा चैत्य को मैं वंदन करता हूँ, क्युं कि यह सदैव बुद्ध के ही रुप हैं ॥

त्रिरत्न वंदना

१. बुद्ध वंदना

इति पि सो भगवा अरहं, स्म्मासम्बुद्धो, विज्जाचरणसम्पन्नो, सुगतो, लोकविदु, अनुत्तरो, पुरिसधम्मसारथि, सत्था देव अनुस्सानं, बुद्धो भगवाति ।।

अर्हंत (जीवनमुक्त), सम्यक संबुद्ध (संपुर्ण जागृत) विद्या और आचरण से युक्त सुगती जिन्होंने प्राप्त की हैं ऐसे लोकविधु, सर्वश्रेष्ठ तथा दमनशील पुरुषों

के सारथी तथा आधार देणे वाले देव और मनुष्यों के शास्ता ऐसे यह भगवान बुद्ध हैं ॥

बुद्धं जीवितं परियन्तं सरणं गच्छामि ।

ऐसे बुद्ध भगवान का जीवनभर अनुसरण करणे का मैं निर्धार करता हूँ ॥

ये च बुद्धा अतीता च, ये च बुद्धा अनागता।
पच्चुपन्ना च ये बुद्धा, अहं वन्दामि सब्बदा।

भुतकाल में जो बुद्ध हो गएं हैं, भविष्य में जो बुद्ध होंगे तथा (अनंत लोगों के दुःख के नाशक) वर्तमान में जो बुद्ध हैं, उन सभी को मैं वंदन करता हूँ ॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं, बुद्धो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन होतु मे जयमंङ्गलं ।

मुझे और किसी का आधार नहीं, केवल बुद्ध ही मेरा सर्वश्रेष्ठ आधार हैं, इस सत्य वचन से मेरा मंगल हो

उत्तमग्गेन वंदे हं पादपंसु वरुत्तमं।
बुद्धे यो खलितो दोसो, बुद्धो खमतु तं ममं।

बुद्ध भगवान के पवित्र चरणों के धुल को मैं वंदन करता हुं । बुद्ध के संबंध में मेरी और से कोई अपराध हो गया हो तो वे भगवान बुद्ध मुझे क्षमा करे ॥

यो सन्निसिन्नो वरबोधि मुले, मारं ससेनं महंति विजेत्वा
सम्बोधिमागच्चि अनंतञान, लोकत्तमो तं प नमामी बुद्ध

इस लोक मे जो अनेक प्रकार के अनमोल रत्न हैं उन मे से किसी से बुद्ध की बराबरी नहीं हो सकती , इस सत्य वचन से मंगल हो ॥

जिन्होंने पुज्य बोधीवृक्ष के नीचे बैठकर, मार सेना का पराभव किया, अनंत ज्ञान कि प्राप्ती कर जिन्होंने बुद्धत्व की प्राप्ती की, जो सारे विश्व में श्रेष्ठ हैं ऐसे भगवान बुद्ध मैं नमस्कार करता हूँ ॥

२. धम्म वंदना

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको, एहिपस्सिको ओपनाय्यिको पच्चतं वेदित्ब्बो विञ्ञुही'ति।

भगवान (बुद्ध) ने जिस सुंदर धर्म का उपदेश किया सच्चाई यहीं आखों के द्वारा देख सकते हैं, जो धर्म अपना फल जल्द ही देता हैं, कोई भी जिसका अनुभव करें, यह सिद्धांत विज्ञान के द्वारा खुद अनुभव करके देख सकतें हैं ॥

धम्मं जीवित परियन्तं सरणं गच्छामि।
ऐसे धर्म का मैं जीवनभर अनुसरण करने का निर्धार करता हूँ ॥

ये च धम्मा अतीता च, ये च धम्मा अनागता।
पच्चुपन्ना च ये धम्मा, अहं वन्दामि सब्बदा।

जो भुतकाल के बुद्धों के द्वारा उपदेश किया हुआ धर्म हैं, जो भविष्यकाल के बुद्धों के द्वारा उपदेश किया हुआ धर्म होगा तथा (अनंत लोगों के दुःख के नाशक) वर्तमान के बुद्ध के द्वारा उपदेश किया

हुआ जो धर्म हैं, उन सभी धर्मों को मैं वंदन करता हूँ ॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं धम्मो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन होतु मे जयमङ्गलं।

मुझें किसी और का आधार नहीं, केवल बुद्ध का धर्म हिं मेरा एकमेव आधार हैं, इस सत्य वचन से मेरा मंगल हो ॥

उत्तमङ्गेन वन्देहं, धम्मञ्च दुविधं वरं।
धम्मे यो खलितो दोसो, धम्मो खमतु तं ममं।

सभी प्रकार से श्रेष्ठ ऐसे बुद्ध के धर्म को मैं वंदन करता हूँ , यदी धर्म के संबंध मेरे से कोई अपराध हुआ हो तो वह धर्म मुझे क्षमा करें ॥

अठ्ठाङ्गिको अरिय पथो जनानं मोक्खप्पवेसा उजको व मग्गो
धम्मो अयं सन्तिकरो पणीतो, निय्यानिको तं प नमामी धम्मं

इस लोक मे जितने अनेक प्रकार के अनमोल रत्न हैं उन में से किसी से भी उन मे से किसी से भी बुद्ध के धर्म कि बराबरी नहीं हो सकती, इस सत्य वचन से मेरा कल्याण हो ॥

यह जो आर्य अष्टांगीक मार्ग हैं वह निर्वाण प्राप्ती का सीधा मार्ग हैं, जो सर्वश्रेष्ठ तथा शांतीदायक सद्धर्म हैं मैं उस धर्म को वंदन करता हूँ ॥

३.संघ वंदना

सुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, उजुपतिपन्नो भगवतो सावकसंघो, ञायपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, सामीचपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो।

भगवान का श्रावक संघ सन्मार्ग पर चल रहा हैं,
भगवान का श्रावक संघ सीधे मार्ग पर चल रहा हैं,
भगवान का श्रावक संघ ज्ञान के मार्ग पर चल रहा हैं,
भगवान का श्रावक संघ उत्तम मार्ग पर चल रहा हैं

यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानी, अठ्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसंघो, आहुनेय्यो, पाहुनेय्यो, दक्खिनेय्यो, अञ्जलिकरणीयो, अनुत्तरं पुञ्ञक्खेतं लोकस्सा’ति॥

भगवान का श्रावक संघ ऐसे नर रत्नों का हैं जिसने चार जोडीया और आठ सप्तपदों कि प्राप्ती की हैं, यह संघ निमंत्रण देणे योग्य, स्वागत करने योग्य, दक्षिणा देणे योग्य तथा विश्व का सर्वश्रेष्ठ पुण्यक्षेत्र हैं ॥

संघं जीवित परियन्तं सरणं गच्छामि।
ऐसा यह संघ नमस्कार करणे योग्य हैं, मै जीवनभर इस संघ को शरण जाता हूँ ॥

ये च संघा अतीता च, ये संघा अनागता।
पच्चुपन्ना च ये संघा अहं वन्दामि सब्बदा।

भुतकाल के बुद्धों के द्वारा स्थापित श्रावक संघ, भविष्यकाल के बुद्धों के द्वारा स्थापित श्रावक संघ होंगे, तथा वर्तमान के बुद्ध के द्वारा स्थापित

श्रावक संघ हैं उन सभी उन सभी को मै वंदन करता हूँ ॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं, संघो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन, होतु मे जयमङ्गलं॥

मुझे किसी और का आधार नहीं, केवल बुद्‌ध का श्रावक संघ ही मेरा एकमेव आधार हैं, इस सत्य वचन से मेरा कल्याण हो ॥

उत्तमङ्गेन, वन्देहं, संघ ञ्च तिविधुत्तमं।
संघे यो खलितो दोसो, संघो खमतु तं ममं॥

तीनों प्रकार से श्रेष्ठ, ऐसे भगवान के श्रावक संघ को मैं प्रणाम करता हूँ, संघ के संबंध मे मुझ से कोई अपराध हुआ हो तो संघ मुझें क्षमा करें ॥

सङ्घो विसुद्धो वर दक्खिनेय्यो, सन्तिद्रियो सब्बमलप्पहिनो
गुणेहि नेकेहि समाद्धिपतो, अनासवो तं प नमामी संघ

इस लोक में जो अनेक प्रकार के रत्न हैं, उन मे से किसी से भी बुद्ध के श्रावक संघ की बराबरी नहीं हो सकती, इस सत्य वचन से मेरा कल्याण हो ॥ संघ विशुद्ध, दक्षिणा देणे योग्य, अनेक प्रकार से गुणों से युक्त संघ को मैं प्रणाम करता हूँ ॥

रतनत्तयं वंदना त्रिरत्न वंदना

नमामि बुद्धं गुणसागरं तं , सत्था सदा होन्तु सुखि आवेरा । कायो जिगुच्छो सकलो दुगन्धो , गच्छन्ति सब्बे मरणं अहंञ्च ।।१।।

अनंत गुणों के सागर भगवान बुद्ध को मैं नमस्कार करता हूँ, मित्रत्व कि भावना से सभी प्राणी सुखी हो, यह शरीर तो दुर्गंधी का घर हैं, सभी प्राणी विनाश कि ओर प्रस्थान कर रहें हैं, मैं भी मृत्युधर्मी हूँ ॥

नमामि धम्मं सुगतेन देसितं , सत्था सदा होन्तु सुखी अवेरा । कायो जिगुच्छो सकलो दुगन्धो , गच्छन्ति सब्बे मरणं अहंञ्च ।।२।।

भगवान ने उपदेश किये हुए धर्म को मैं नमस्कार करता हूँ, मित्रत्व कि भावना से सभी प्राणी सुखी हो, मित्रत्व कि भावना से सभी प्राणी सुखी हो, यह शरीर तो दुर्गंधी का घर हैं, सभी प्राणी विनाश कि ओर प्रस्थान कर रहें हैं, मैं भी मृत्युधर्मी हूँ ॥

नमामि संघं मुनिराज सावकं , सत्था सदा होन्तु सुखी अवेरा । कायो जिगुच्छो सकलो दुगन्धो , गच्छन्ति सब्बे मरणं अहंञ्च ।।३।।

मुनीराज भगवान बुद्‌ध के श्रावक संघ को मैं नमस्कार करता हूँ, मित्रत्व कि भावना से सभी प्राणी सुखी हो, यह शरीर तो दुर्गंधी का घर हैं, सभी प्राणी विनाश कि ओर प्रस्थान कर रहें हैं, मैं भी मृत्युधर्मी हूँ ॥

नमामि पच्चेक बुद्‌धं विसुद्‌धं , सत्था सदा होन्तु सुखी अवेरा । कायो जिगुच्छो सकलो दुगन्धो , गच्छन्ति सब्बे मरणं अहंञ्च ।।४।।

परम विशुद्‌ध भगवान बुद्‌ध को मैं नमस्कार करता हूँ, मित्रत्व कि भावना से सभी प्राणी सुखी हो, यह शरीर तो दुर्गंधी का घर हैं, सभी प्राणी विनाश कि ओर प्रस्थान कर रहें हैं, मैं भी मृत्युधर्मी हूँ ॥

संकल्प

इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया बुद्‌धं पुजेमि ।
इस धर्माचरण से मैं बुद्‌ध कि पुजा करता हूँ ॥

इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया धम्मं पुजेमि ।

इस धर्माचरण से मैं धर्म कि पुजा करता हूँ ॥

इमाय धम्मानुधम्म पटिपत्तिया संघं पुजेमि । १ |
इस धर्माचरण से मैं संघ कि पुजा करता हूँ ॥

अध्दाय इमाय पटिपत्तिया जाति-जरा-मरण
म्हा परिमुत्त्चिस्सामि ।।२।।

इस धर्माचरण से मुझें जन्म, जरा तथा मृत्यु से
मुक्ती मिलेगी ॥

इमिना पुत्त्र कम्मेन , मा-मे बालं समागमो ।
संत समागमो होतु याव निब्बान पत्तिया ।।३।।

इस पुण्याचरण से निर्वाण कि प्राप्ती तक मुर्ख से
संगत ना हो, ज्ञानीयों की संगति हो..॥

देवो वस्सतु कालेन , सस्स सम्पत्ति हेतुच । फीतो भवतू लोकेच , राजा भवतु धम्मिको ।।४।।

फसल की बढत के लिए समय पर वर्षा हो, संसार के सभी जीवों कि वृद्धी हो, राजा (=सरकार) धार्मिक हो

सुत्तपाठ

महामंगलसुत्तं

बहु देवा मनुस्सा च मंङ्गलानि अच्चिन्तयुं।
आकङ्खमाना सोत्थानं ब्रुहि मंङ्गलमुत्तमं॥१॥

कल्याण कि कामना करते हुए कितने हि देव और मनुष्य मंगल धर्मो के संबंध में चिंता कर रहे है ! हे तथागत ! आप हि कृपा कर बतैये कि वास्तविक श्रेष्ठ मंगल क्या है ..?

असेवना च बालानं पण्डितानञ्च सेवना।
पुजा च पुजनीयानं एतं मंङ्गलमुत्तमं॥२॥
अज्ञानियों से दूर रहना, ज्ञानियोंकी सांगति करना और जो पूजनीय है उनकी पूजा करना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

पतिरुपदेसवासो च पुब्बे च कतपुञ्ञता।
अत्तसम्मापणिधि च एतं मंङ्गलमुत्तमं॥३॥
उपयुक्त देश मी निवास करना, पूर्व कार्मो का संचित पुण्य होना और स्वयं को सम्यक रूपेण समाहित रखना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

बाहुसच्चं च सिप्पंञ्च विनयो च सुसिक्खितो।
सुभासिता च या वाचा एतं मंङ्गलमुत्तमं॥४॥

अनेक विद्याओं और शिल्प कलाओं मी निपुण होना, विनय स्वभाव में सुशिक्षित होना और वार्तालाप में सुभाषी होना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

माता-पितु उपट्ठानं पुत्तदारस्स सङ्गहो। अनाकुला च कम्मन्ता एतं मंङ्गलमुत्तमं॥५॥
माता पिता कि सेवा करना, परिवार का पालन पोषण करना और निष्पाप व्यवसाय करना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

दानंञ्च धम्मचरिया ञातकानं च सङ्गहो।

अनवज्जानि कम्मानि एत मंङ्गलमुत्तमं॥६॥

दान देणा, धर्माचरण करना, सजातीय संबंधियों कि सहायता कर संग्रह करना और वर्जित दुष्कर्म न करना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

अरति विरति पापा मज्जपाना च सञ्ञमो ।
अप्पमादो च धम्मेशु, एतं मङ्लमुत्तमं ।।७।।
तन मन धन से पापों का त्याग करना, मदिरा सेवन से दूर रहना और कुशल धर्मो के पालन मी सदा सचेत रहना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

गारवो च निवातो च, सन्तुट्ठी च कतञ्ञुता ।
कालेन धम्मसवणं, एतं मङ्लमुत्तमं ।।८।।

पूजनीय व्याक्तियो को गौरव देना, सदा विनीत रहना, संतुष्ट राहना, कृतज्ञ रहना और उचित समय पर धर्म श्रवण करना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

खन्ति च सोवचस्सता, समणानंञ्च दस्सनं ।
कालेन धम्मसाकच्छा, एतं मङलमुत्तमं ।।९।।

सहनशील होना, अज्ञाकारी होना, श्रमणो का दर्शन करना और उचित समय पार धर्म चर्चा कारना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

तपो च ब्रह्मचरियंच, अरिय सच्चान दस्सनं
निब्बाण सच्चिकिरिया च, एतं मङलमुत्तमं ।।१०।।

तप साधना करना, ब्रह्मचर्य पालन करना, चार आर्य सत्यो का दर्शन कारण और निर्वाण का सक्षात्कार करना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

फुट्ठस्स लोकधम्मेहि, चित्तं यस्स न कम्पति ।
असोकं विरजं खेमं, एतं मङलमुत्तमं ।।११।।

जिसका चित्त लोक धर्मो से विचलित नही होता, निःशोक, निर्मल और निर्भय रहना यह श्रेष्ठ मंगल है ॥

एतादिसानि कत्वान, सब्बत्थंअपराजिता ।
सब्बत्थ सोत्थि गच्छन्ति, तं तेसं मङलमुत्तमं न्ति ।।१२।।

जो उपर्युक्त (३८) मंगल धर्मो का पालन करते हुए सर्वत्र जय लाभी होते है, सर्वत्र कल्याणलाभी होते है, उन मंगल मार्गियों के ये ही श्रेष्ठ मंगल है ॥

करणीय मेत्तसुत्तं

करणीय मत्थ कुसलेन, यंन्तपदं अभिसमेच्च ।
सक्को उजु च सुजु च, सुवचो चस्स मुदु अनतिमामी
।।१।।

शांति पद के प्राप्ति कि कामना करने वाले, कल्याण साधना प्रवीण प्राप्त मनुष्य को इमानदार बनना चाहिए ॥

सन्तुस्सको च सुभरो च अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ति ।
सन्तिद्रियो च निपको च, अप्पगब्भो कुलेसु अननुगिद्धो ।।२।।

वह संतोष प्राप्त सरल जीवन चलाने वाला सज्जन और अनासक्त होना चाहिए ॥

न च खुद्दं समाचरे किञ्चि, येन विञ्ञु परे
उपवदेय्यु ।
सुखिनो व खेमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु
सुखितता ।।३।।

विद्वान लोक निंदा ना कर पाये, ऐसे छोटा से छोटा कार्य न करें, सभी प्राणी सुखी हो, सबका कल्याण हो, सभी को सिद्धी प्राप्त हो (ऐसी मैत्रीभावना करें) ॥

ये केचि पाणभुतत्थि, तसा वा थावरा वा अनवसेसा ।
दीघा वा ये महन्त वा, मज्झिमा रस्सका अणुकुथुला
।।४।।

दिट्ठावा ये वा अदिट्ठा, ये च दुरे वसन्ति अविदुरे ।
भुता वा संभवेसी वा, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता ।।५।।
सभी प्रकार के उत्पन्न हुये हूए तथा उत्पन्न न हुये हूए प्राणी सुखी हो... ॥

न परो पर निकुब्बेथ, नातिमञ्ञेस्स कत्थचिनंकञ्चि ।
ब्यारोसना पटिघसञ्ञा नातिमञ्ञस्स दुक्खिमिच्छेय ।।६।।
कोई किसी कि वंचना न करें, कोई किसी का अपमान ना करें, कोई किसी को दुःख देने कि कामना ना करें

माता यथा न्हयं पुत्तं, आयुसा एकपुत्तनुरक्खे ।
एवम्पि सब्ब भुतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं ।।७।।

जिस तरह माता अपने पुत्र के रक्षण हेतु, स्वयं प्राण को न्योछावर करती हैं, उसी तरह सभी जीवों के प्रती अपने चित्त मे निस्सीम प्रेम कि भावना जागृत करें

नेतञ्च सब्बलोकस्मि मानसं भावये अपरिमाणं ।
उद्धं अधो च तिरियञ्च, असम्बाधं अवेरं असपत्तं

मन कि बाधा, वैरभाव तथा शतृत्व को त्याग कर सारे विश्व के प्रती मन मे निस्सीम प्रेम कि भावना करें ॥

तिट्ठ चरं निसिन्नो वा सयानो वा, यावतस्स विगतमिद्धो ।
एतं सति अधिट्ठेय ब्रह्ममेतं विहारं इधमाहु ।।९।।

खडे रहते, बैठे रहते तथा सोये रहते (जिस समय तक) जागृत होगे, तब तक ऐसी ही स्मृती रखें, इसी को ब्रह्मविहार कहते हैं ॥

दिट्ठिञ्च, अनुपगम्म, सीलवा दस्सेनेन सम्पन्नो ।
कामेसु विनेय्य गेहं, न हि जातु गभ्धसेय्यं
पुनरेतभाति ।।१०।।

ऐसा मनुष्य कभी मिथ्या दृष्टी मे न पडते हूए,
शीलवान होकर, विशुद्ध दर्शन से युक्त होकर, काम
- तृष्णा का नाश कर के गर्भाशय से मुक्त होते हैं ॥

जयमंङ्गल अठ्ठगाथा

बाहुं सहस्स मभिनिम्मित सायुधन्त,
गिरिमेखलं उदित घोर-ससेन-मारं ।
दानादि धम्मविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ।।१।।

जिन मुनींद्र ने सुदृढ हत्यार धरण करके, सहस्रबाहु,
गिरीमेखल नामक हाथी पे सवार होकर अपनी
भयानक सेना के साथ आये हुए मार को अपने दान
आदी धर्म बल से विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्ध
के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

मारातिरेक-मभियुज्झित-सब्बरंत्ती,
घोरम्पनाल वक मक्ख मथद्ध यक्ख ।
खान्ति सुदन्तविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ।।२।।

जिन मुनींद्र ने मार के अलावा समस्त रात्री भर संग्राम करने वाले घोर दुर्धर तथा निष्ठुर ह्रदय वाले आलवन नाम के यक्ष पर अपने क्षांती और संयम के बल पर विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्‌ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

नालागिरि गजवरं अतिमत्तभूतं,
दावग्गिचक्कमसनीव सुदारूणन्तं।
मेत्तम्बुसेक विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवुत ते जयमंगलानि ।।३।।

जिन मुनींद्र ने दावाग्नीचक्र और बिजली के समान अत्यंत भयानक नालागीर हाथी पर अपने मैत्री के अभिषेक से विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्‌ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

उक्खित्त खग्ग-मतिहत्थ सुदारूणन्त,
धावं तियोजनपथंगुलि-मालवन्तं ।
इधंदीभिसंखत मनो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु तेजयमंगलानि ।।४।।

जिन मुनींद्र ने हाथ मे तलवार लेकर एक योजन तक दौडने वाले अत्यंत भयानक अंगुलीमाल पर अपने ॠद्धीबल से विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

कत्वान कटठमुदरं इव गब्भिनीया, चिञ्चाय
दुट्ठवंचन जनकायमज्झे ।
सन्तेन सोमविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु तेजयमंगलानि ।।५।।

जिन मुनींद्र ने गर्भवती कि नकल कर के (बुद्ध पर कलंक लगाने के लिए) जनता के समक्ष दुष्ट वचन करने वाली चिंचा नाम के स्त्री पर अपने शांति और सौम्यता आदी गुणों से विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

सच्चं विहाय मतिसच्चकवादकेतुं, वादाभिरोपितमनं अतिअन्धभूतं ।
पञ्ञापदीपजलितो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु तेजयमंगलानि।।६।।

जिन मुनींद्र ने सत्य का साथ छोडे हूए असत्यवादी, अभिमान, वाद विवाद में उत्तम अहंकार से अंधे हूये हूए सच्चक नाम के परिव्राजक पर अपने प्रज्ञा के प्रदीप द्वारा विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

नन्दोवनन्द भुजगं विवुधं महिद्धि,
पुत्तेन थेरभुजगेन दमापयन्तो ।
इद्धुपधेसविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवुत ते जयमंगलानि ।७।

जिन मुनींद्र ने महाऋद्धीसंपन्न, नंदोपनंद नाम के भुजंग पर अपने महामोग्गलायन शिष्य के द्वारा ऋद्धी और उपदेश के बल से विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो ॥

दुग्गाहदिठ्टिभुजगेन सुदठ्टहत्थं,
ब्रम्ह विसुद्धि जुतिमिद्धि बकाभिधानं ।
ञाणागदेन विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ।।८।।

जिन मुनींद्र ने भयंकर मिथ्या दृष्टी वाले,
विशुद्धज्योती, महारिद्धीसंपन्न बक नाम के ब्रह्मा
पर विजय प्राप्त की उन भगवान बुद्ध के प्रभाव से
मेरा मंगल हो ॥

एतापि बुद्ध जयमंगल अठ्ट गाथा,
यो वाचको दिनदे सरते मतन्दी
हित्वान नेकाविविधानि चुपद्दवानि,
मोक्खं सुखं अधिगमेय्य नरो सपञ्ञो ।।९।।

आदेश

चरथ भक्खवे चारिकं बहुजन हितायबहुन सुखाय । लोकानुकंम्पाय अध्याय हिताय सुखाय देवमनुस्नानं । देसे थ भिक्खवे , धम्मं आदि कल्याणं मज्झे कल्याणं परियोसान कल्याणं । सात्थं सव्यज्जनं केवल परिपुण्णं परिसुद्‌धं ब्रम्हचरियं पकासेथं । नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासबुद्‌धस्स....... दुतियम्पि ततियम्पि

सब्ब सुखगाथा

सब्बे सत्ता सुखी होंन्तु , सब्बे होंन्तु च खेमिनो ।
सब्बे भद्रानिपस्स न्तु , माकत्रिच दुक्खमागमा ।।१।।

सभी प्राणी सुखी हो, सभी निरोगी रहे, सभी में
परस्पर भाईचारा हो किसी को कोई दुःख न हो|

यानीध भूतानी समा गतानि भूम्मनि वायानिव
अन्तलिख्खे सब्बेव ।
भूता सुमना भवन्तु अथो पि सक्कच्च सणन्तु
भासितं ।।२।।

इस प्रकार पृथिवी पर या आकाश में जितने भी प्राणी
उपस्थित है वे सभी प्रसन्न हो और हमारी बात
ध्यान पूर्वक सुने

तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे मेतं करोथ मानूसिया पजाय ।
दिवाच रतोच्च हरन्ति ये बलि तस्माहिने रक्खथ अप्पमत्ता ।।३।।

इसलिए सभी प्राणी सुने, मनुष्य मात्र के प्रति मैत्री करे; जो की वे दिन रात उनका पालन करते रहते है इसलिए अप्रमत्त होकर उनकी रक्षा करे|

सल्लसुतं

अनिमित्त मनञ्ञातं, मच्यानं इध जीवितं।
कसिरं च परित्तं च, तं च दुक्खेन संञ्ञुतं ।।१।।

यहां मनुष्य का जीवन और नियमित और अज्ञात है कठिन और अल्प है और वह भी दुख से युक्त है|

न हि सो उपक्कमो अत्थि, येन जाता न मिय्यरे ।
जरंम्पि पत्वा मरणं, एवं धम्माहि पाणिनो ।।२।।

कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे कि जन्म हुए लोग न मरे| बुढ़ापा प्राप्त करके भी मरना होता है प्राणियों का ऐसा ही स्वभाव है|

फलानमिव पक्कानं, पातो पतनतो भयं ।
एवं जातानं मच्चानं, निच्चं मरणतो भयं ।।३।।

जैसे पके हुए फलों को प्रातः गिरने का भय होता है वैसे ही जन्म लिए हुए प्राणियों को नित्य मृत्यु से भय लगता है

यथापि कुंभ्कारस्स, कता मत्तिक भाजना । सब्बे भेदन परियंता, एवं मच्चान जीवितं ।।४।।

जैसे कुम्हार द्वारा बनाए मिट्टी के बर्तन सभी टूट जाने वाले हैं ऐसा ही प्राणियों का जीवन नष्ट होने वाला है

दहरा च महन्ता च, ये बाला ये च पण्डिता ।
सब्बे मच्चुवसं यन्ति, सब्बे मच्चु परायणा ।।५।।

तरुण बड़े बच्चे और बुद्धिमान सभी मृत्यु के वश में चले जाते हैं सभी मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं|

तेसं मच्चुपरेतानं, गच्छत परलोकतो ।
न पिता तायते पुत्तं, ञाती वा पन ञातके।।६।।

उन मृत्यु के अधीन रहने वालों के परलोक जाते समय ना तो पिता पुत्र की रक्षा करता है और ना भाई बंधु, भाई बंधुओं की |

पेक्खतं येव ञातीनं पस्सलाल पथं पुथु ।
एवमेव च मच्चानं, गो वज्झे विय निय्यति ।।७।।

भाई बंधुओं के देखते हुए ही नाना प्रकार के विचारों को देखते हुए भी मृत्यु अकेले ही प्राणियों को वध करने वाली गौ की भांति ले जाती है

एवमब्भाहतो लोको, मच्चुना च जराय च ।
तस्मा धीरा न सोचन्ति, विदित्वा लोक परियायं ।।८।।

जिस प्रकार यह लोक मृत्यु और बुढ़ापे से पीड़ित है इसलिए धीर पुरुष संसार के स्वभाव को जानकर शोक नहीं करते हैं.

यस्स मग्गं न जानासि, आगतस्स गत्तस्स वा ।
उभो अंते असम्पस्सं, निरत्थं परिदेवसि ।।९।।

जिसके आने और जाने के मार्ग को नहीं जानते हो दोनों अन्तो को न देखते हुए व्यर्थ में विलाप कर रहे हो.

परिदेवया मानो चे, कंचिदत्थं उदब्बहे ।
सम्मुळ्हो हिंस मत्तानं, कयिरा चेतं विचक्खणो ।।१०।।

यदि विलाप करते हुए कुछ भी अपना भला कर सके तो बुद्धिमान व्यक्ति भी अपने को पीड़ित करता हुआ वैसा करें|

न हि रुण्णेन सोकेन, सन्ति पप्पोति चेतसो ।
भिय्यस्सुप्पज्जते दुक्खं, सरीरं उपहञ्ञति ।।११।।

न ही रोने और शोक करने से चित्त को शांति प्राप्त नहीं होती प्रत्युत: और अधिक दुख ही उत्पन्न होता है और शरीर पीड़ित होता है

किसो विवण्णो भवति, हिंसमत्तानमत्तना ।
न तेन पेता पालेन्ति, निरत्था परिदेवना ।।१२।।

अपने आप को पीड़ित करते हुए व्यक्ति कृष और कुरूप हो जाता है उसे प्रेत्यों का पालन नहीं होता विलाप करना निरर्थक है

सोकमप्पजहं जन्तु, भिय्यो दुक्खं निगच्छति ।
अनुत्थंतो कालकतं, सोकस्स वसमन्वगु ।।१३।।

जो व्यक्ति शोक को नहीं छोड़ता वह अत्यधिक दुख को प्राप्त होता है मरे हुए व्यक्ति के लिए पश्चाताप करते हुए शोक के ही वक्त पड़ जाता है

अञ्ञपि पस्स गामिनो, यथा कम्मुपगे नरे ।
मच्चुनो वस मागम्म, फंदंते विध पाणिनो ।।१४।।

अपनी कर्मानुसार अन्य भी मर कर जाने वाले मनुष्यों और मृत्यु के वश पढ़कर यहां छटपटाते हुए प्राणियों को देखो|

मनुष्य जिस जिस बातों को अच्छा समझता है वह उससे भिन्न हो जाती हैं| इस प्रकार वियोग और लोक के स्वभाव को देखो|

यदि मनुष्य सो वर्ष या उससे अधिक जीवित रहे तो भी वह भाई बंधुओं से अलग हो जाता है और यहां जीवन को छोड़ देता है||

इसलिए अहर्त के उपदेशों को सुनकर विलाप करना छोड़ दो और मरे हुए व्यक्ति व्यक्ति को देख कर सोचो कि अब वह मुझे फिर नहीं मिल सकता|

जिस प्रकार आग लगे घर को पानी से बुझाते है ऐसे ही धीर. प्रज्ञावान, बुद्धिमान और कुशल नर उत्पन्न सुख को शीघ्र ही उस उसी तरह नष्ट कर देता है जैसे कि वायु रुई को उड़ा ले जाए|

अपना सुख चाहने वाले मनुष्य शल्य रूपी रोना, विलाप करना और मानसिक दुःख को निकाल दे|

जो शल्य रहित है, अनासक्त है और चित्त शांति को प्राप्त होता है वह सब शोक से परे और शोक रहित होकर शांत होता है |

शुभेच्छा

इच्छितं पत्थितं तुव्ह खिप्पमेव समिज्झतु । सब्बे पुरेंतु चित्तसंकप्पा चन्दो पन्नरसो यथा ।।१।।

तुम्हारी चाहिए हुई वह मांगी गई सभी वस्तुएं तुम्हें शीघ्र प्राप्त हो तुम्हारे चित्र के सभी संकल्पों पूर्णिमा के चंद्रमा के समान पूरे हो | 1 |

अभिवादनसीलिस्स निच्चं बुड्ढापचायिनो ।
चत्तारो धम्मा वड्ढंति आयु वण्णो सुखं बलं ।।2।।

जो अभिवादन शील है जो सदा भक्तों की सेवा करने वाला है उसकी चार बातें बढ़ती है आयु वर्ण सुख और बल ||2 ||

सब्बितियो विविज्जंतु सब्बरोगो विनासतु ।
मा ते भवत्वन्तरायो सुखी दीघायुको भव ।।3।।

सभी अतियों से आप विरहित हो| आपके सभी रोग नष्ट हो| बाधाओं से अंतराय हो| आप सुखी और दीर्घायु बने || ३ ||

भवतु सब्ब मङ्गलम, रक्खंतु सब्ब देवता ।सब्ब
बुद्धानुभावेन, सदा सोत्थि भवन्तु ते ।।४।।

बुद्ध के प्रभाव से मेरा मंगल हो, सभी देवता रक्षण
करें और मेरा कल्याण हो ॥

भवतु सब्ब मंङलम रक्खंतु सब्ब देवता । सब्ब
धम्मानुभावेन सदा सोत्थि भवन्तु ते ।।५।।

धर्म के प्रभाव से मेरा मंगल हो, सभी देवता रक्षण
करें और मेरा कल्याण हो ॥

भवतु सब्ब मङलम रक्खंतु सब्ब देवता । सब्ब
संघानुभावेन, सदा सोत्थि भवन्तु न्ति ते ।।६।।

संघ के प्रभाव से मेरा मंगल हो, सभी देवता रक्षण
करें और मेरा कल्याण हो ॥

धम्मपालन गाथा

सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसंपदा । सचित्त परियोदपनं, एतं बुद्धान सासनं ।। १ ||

कोई पाप न करना, सद्धर्म का पालन करना, अपने मन को सद्धर्म के मार्ग पर लगाना यहीं बुद्ध का शासन हैं ॥

धम्मं चरे सुचरित, न तं दुच्चरितं चरे ।
धम्मचारी सुखं सेति, अस्मिं लोके परम्हिच ।।२ ||

सुचरीत धर्म का आचरण करें, दुराचरण का त्याग करें, धर्माचरण करने वालों को सभी लोक में सुख से नींद आती हैं ॥

न तावता धम्मधरो, यावता बहु भासातिं ।
यो च अप्पम्पि सुत्वानं, धम्मं कायेन पस्सति । स वे
धम्मधरो होति, यो धम्मं नप्पमज्जति ।। ३ ||

बहुत बोलने(उपदेश) से कोई धार्मिक नहीं होता,
बल्कि जो थोड़ा सा भी सुनकर धर्म को काय(शरीर)
से धारण करता है, जो धर्म में असावधानी (प्रमाद)
नहीं करता वही धार्मिक होता है|

नत्थि मे सरणं अञ्ञं, बुद्धो मे सरणं वरं ।
एतेन सच्चवज्जेन होतु में जयमङलम ।।

बुद्ध के सिवा मेरे लिए कोई और दुसरा शरण नहीं,
इस सत्य वचन से मेरा कल्याण हो ॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं, धम्मो मे सरणं वरं ।
एतेन सच्चवज्जेन होतु मे जयमङलम ।।

धर्म के सिवा मेरे लिए कोई और दुसरा शरण नहीं,
इस सत्य वचन से मेरा कल्याण हो ॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं, संघो मे सरणं वरं ।
एतेन सच्चवज्जेन होतु मे जयमङ्लम ।।

संघ के सिवा मेरे लिए कोई और दुसरा शरण नहीं,
इस सत्य वचन से मेरा कल्याण हो ॥

नमो बुद्धाय
नमो धम्माय
नमो संघाय

साधु, साधु, साधु